"निष्पर्व"

प्रस्तुत अध्ययन वाराणसी जनपद के चयनित चार महाविद्यालयों में उच्च शिक्षार्थ विभिन्न विषय/वर्गों के छात्र/छात्राओं पर किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षार्थ छात्र/छात्राओं के व्यवहार में परम्परावाद एवं आधुनिकतावॉय की अवस्थिति का पता लगाना रहा है।

उच्च शिक्षार्थ छात्र/छात्राओं के व्यवहार में परम्परावाद का मापन करने के लिए पूछे गये प्रश्नों पर उत्तरदाताओं ने अपनी स्वतंत्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। घर में सम्पन्न होने वाली धार्मिक क्रियाओं में सहभागिता के प्रश्न पर हमारी प्रथम शून्य प्राक्कल्पना, घर में होने वाली धार्मिक क्रियाओं में सहभागिता की परम्परावादी दृष्टिकोण मानने के बिन्दु पर छात्र/छात्राओं की सोच में कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि छात्रों (81.33%) की अपेक्षा छात्राओं (92%) अधिक परम्परावादी हैं। ईश्वर में विश्वास के बिन्दु पर हमारी दूसरी शून्य प्राक्कल्पना, ईश्वर में विश्वास को परम्परावादी दृष्टिकोण से देखने के प्रश्न पर उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के छात्र/छात्राओं की सोच में कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि उच्च आय वर्ग (70.37%), मध्यम आय वर्ग (78.18%) की अपेक्षा निम्न आय वर्गीय (94.76%) छात्र/छात्रा ईश्वर में ज्यादा विश्वास करते हैं।
ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए आराधना व ब्रत रखने के विन्दु पर हमारे निदर्शन के 77 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। सांस्कृतिक संज्ञान के विन्दु पर हमारे निदर्शन का 66 प्रतिशत भाग सकारात्मक रहा है। जीवन में संस्कारों की उपयोगिता के प्रश्न पर हमारी तीसरी शून्य प्राक्कल्पना, संस्कार को परम्परागतिक दिशा का पोषक मानने के विन्दु पर ग्रामीण एवं नगरीय छात्र/छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकृत हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ग्रामीण परिवेश के छात्र/छात्राओं (80.66%) एवं नगरीय परिवेश के छात्र/छात्राओं (69.33%) में संस्कारों की जीवन में उपयोगिता के विन्दु पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ग्रामीण और नगरीय महाविद्यालयों के अधिकांश छात्र/छात्रायें जीवन में संस्कारों के महत्व को स्पष्टक रखते हैं। किसी नये कार्य को आरम्भ करने से पूर्व मंगलाचरण (पारम्परिक कर्मकाण्ड या पूजा—पाठ) की आवश्यकता के प्रश्न पर निदर्शन 75.33 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। कर्मकाण्ड के प्रति उत्तरदाताओं के वृद्धिकारण के प्रश्न पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि एकाकी परिवार (38.46%) की अपेक्षा संयुक्त परिवार (55.19%) के छात्र/छात्र अधिक संख्या में इस विन्दु पर सकारात्मक हैं।

पुनर्जन्म में विश्वास के प्रश्न पर हमारी चतुर्थ शून्य प्राक्कल्पना निरस्त हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि छात्रों (44.66%) की अपेक्षा छात्राओं (61.33%) का पुनर्जन्म में अधिक विश्वास है। भूत–प्रेम व आत्माओं में विश्वास के प्रश्न पर हमारे निदर्शन के 45.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की जबकि 41.67 प्रतिशत ने सकारात्मक। स्वर्ग–नर्क में विश्वास के प्रश्न पर निदर्शन के 53 प्रतिशत छात्र/छात्र सकारात्मक पाये गये। भाषा में विश्वास के प्रश्न विन्दु पर हमारी पांचवीं शून्य प्राक्कल्पना स्वीकृत हो गयी है और
हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उच्च जाति (77.53 प्रतिशत), पिछड़ी जाति (78.16%) एवं निम्न जाति (50%) के छात्र/छात्राओं में भाग लेने में विश्वास के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है। विभिन्न स्तर के देशी–देवताओं में विश्वास के प्रश्न पर 40 प्रतिशत उत्तरदाता राष्ट्रीय स्तर के देशी–देवताओं में जबकि 27.66 प्रतिशत ग्रामीण स्तर के, 10.33 प्रतिशत क्षेत्रीय स्तर के, 11.00 प्रतिशत प्रदेश स्तर के एवं 11 प्रतिशत अन्य देशी–देवताओं में विश्वास करते पाये गये।

विद्यार्थियों के धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन के प्रश्न पर निदर्श के अधिकांश सा उत्तरदाता (77.67%) सकारात्मक पाये गये। शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक प्रवचनों/अनुष्ठानों/समारोहों के आयोजन के प्रश्न पर निदर्श के 67.33 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। तीर्थ यात्रा के प्रति उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण के प्रश्न पर हमारी छठवीं शून्य प्राक्कल्पना स्वीकृत हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि कृषि (62.35%), व्यापार (50%) एवं नौकरी (50%) पेशा के संस्करण के पात्य छात्र/छात्रों की तीर्थयात्रा को एक अच्छी परम्परा मानने के विन्दु पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है। ब्राह्मण–मुहुर्त में अध्ययन से विद्या की प्राप्ति होती है, इस प्रश्न पर निदर्श के 64.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। प्रत्येक हिन्दू को शिखा, मुसलमान को दादी व सिख को कैश रखने के प्रश्न पर हमारे सार्थिक उत्तरदाता (54.34%) नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते पाये गये जबकि 33.33 प्रतिशत ने इस विन्दु पर अपना समर्थन व्यक्त किया। हिन्दू विवाह को एक धार्मिक संस्कार एवं जन्म–जन्मोत्सवों का समवेत मानने के प्रश्न पर हमारे सातवीं शून्य प्राक्कल्पना स्वीकृत हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ग्रामीण परिवेश के (81.33%) एवं नगरीय परिवेश के 76.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में इस विन्दु पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
वैयाविक अवसरों पर मंगलगीत गाये जाने के प्रश्न पर निदर्श के 93.

67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये हैं। नारी समान के पक्षधर होने के प्रश्न पर निदर्श के 95.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। बरिष्ठ छात्रों को समान देने के प्रश्न पर निदर्श के 80 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। अपने महाविद्यालय को अपना परिवार समझने के प्रश्न पर 79.34 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक हैं। अपने मुज़फ्फरनों को अभिव्यक्ति समझने, उनके मार्गदर्शन में रहकर अध्ययन करने को सर्वथा उपयुक्त मानने के विन्दु पर निदर्श का 97.33 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। शिक्षा तप है और हम सभी छात्र/छात्रा तपस्वी हैं के प्रश्न पर निदर्श का 75.67 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। आज के महाविद्यालयों को ब्रह्मचर्यश्रम का दर्जा दिये जाने के विन्दु पर निदर्श के 46.33 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। वृद्धजनों (बुजुर्गों) को उचित आदर व समान दिये जाने के प्रश्न पर निदर्श के 84.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। सभी जातियों एवं धर्मों में खान-पान रखने के प्रश्न पर हमारी आदर्श शून्य प्राकृतिकना सत्यरूप हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उच्च जाति, पिछड़ी जाति एवं निम्न जाति के छात्र/छात्राओं का विभिन्न जातियों व धर्मों के लोगों के साथ खान-पान रखने के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

जूता-चप्पल पहनकर भोजन पकाने या खाने के विन्दु पर हमारी नवीं शून्य प्राकृतिकना निरस्त हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जूता-चप्पल पहनकर भोजन पकाने व खाने के विन्दु पर उच्च आय वर्ग (22.22%) एवं मध्यम आय वर्ग (34.54%) की अपेक्षा निम्न आय वर्ग (73.82%) के छात्र/छात्रा अधिक नकारात्मक हैं।
आधुनिकता से आशय के प्रश्न पर निदर्श के समस्त उत्तरदाताओं में 16.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नवीन कल्याणकारी विचारधारा को, 13.67 प्रतिशत ने विज्ञान द्वारा प्रदत्त आधुनिक वस्तुएं एवं फैशन को, 15 प्रतिशत ने नवीन जीवन पद्धति को, 16 प्रतिशत ने समतामूलक लोकतांत्रिक विचारधारा को, 14 प्रतिशत ने धर्म निरपेक्षता को, 13 प्रतिशत ने कार्य करने के नये तरीके को एवं 11 प्रतिशत ने हर नयी वस्तु जो देखने में अच्छी लगती है को आधुनिकता का आशय माना है। वे वस्तुयों में जिन्हें आधुनिक माना जा सकता है के विन्दु पर निदर्श के 28.67 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने कम्यूटर (इंटरनेट) एवं डिश टीवी को, 23 प्रतिशत ने टीवी, मोटरसाइकिल एवं मोबाइल को, 21.67 प्रतिशत ने टीवी, फ्रीज, कूलर एवं सोफा को, 15 प्रतिशत ने मिक्सर, वाशिंग मशीन, पंखा एवं अन्य घरेलू उपयोग की वस्तुओं को एवं 13.66 प्रतिशत ने आधुनिक फैशनेबल परिधान एवं वस्तुओं को बतलाया है।

भौतिक साज-सज्जा को क्या आधुनिकता का प्रतीक माना जा सकता है के प्रश्न पर निदर्श के 64.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। परिधान के नवीनतम उत्पादों को आधुनिकता के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाने के प्रश्न पर 60.34 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। निष्क्रिय सूप रूप से निर्णय लेने के विन्दु पर 80.33 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे विशिष्ट अध्ययनों को अभिनव शैक्षिक प्रवृत्ति के रूप में देखे जाने के विन्दु पर हमारी दर्शवीं शून्य प्राकृतिक स्वीकृत हो गयी है और हम इस निष्क्रिय पर पहुंचे हैं कि ग्रामीण परिवेश (66%) एवं नगरीय परिवेश (73%) के छात्र/छात्राओं की इस विन्दु पर आधुनिकतावादी सोच में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। वह-शिक्षा को आधुनिकता का प्रतीक मानने के विन्दु पर निदर्श का 67 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया।
आधुनिकता का समबन्ध जीवन की खुशहाली और सुख, से होने के बिन्दु पर निदर्श के 65.67 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक थाय गये।

वैज्ञानिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र/छात्राओं को आधुनिक माने जाने के बिन्दु पर हमारी ग्यारहवीं शून्य प्राकक्तप्पना निरस्त हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि निम्नजाति (45%) एवं पिछड़ी जाति (69.01%) की अपेक्षा उच्च जाति (74.63%) के छात्र/छात्राओं की सोच में इस बिन्दु पर सार्थक अन्तर है जो उच्च जाति के छात्र/छात्राओं की अधिक मात्रा में आधुनिकताबोध का घोटाल है। आधुनिक मनुष्यों के जाति व्यवस्था में अविश्वास के बिन्दु पर निदर्श का 67.67 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। आधुनिकता धार्मिक बन्धनों से मुक्त होती है के प्रश्न पर निदर्श के 65.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। रोज तर्क के आधार पर सम्पन्न किये गये कार्य आधुनिक मानव की विशेषता है के प्रश्न पर निदर्श के 80.33 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। नवीनता को आधुनिकता मानने के प्रश्न पर हमारी बारहवीं शून्य प्राकक्तप्पना स्पष्टकृत हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि नवीनता को आधुनिकता मानने के बिन्दु पर कला वर्ग (70%), व्यावसायिक वर्ग (74%) एवं वैज्ञानिक वर्ग (80%) के छात्र/छात्राओं की सोच में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। मानव समाज में व्याप्त रुढ़ियों एवं अन्ध-विश्वास आधुनिकता की विरोधी हैं के प्रश्न पर निदर्श का 67 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। पिछड़े हुए वर्गों के दी जाने वाली आरक्षण जैसी सुविधायें आधुनिक सोच के परिणाम हैं के बिन्दु पर निदर्श के 46.33 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। लैगिक न्याय (महिला-पुरुष समानता) को आधुनिकता का परिवारक मानने के बिन्दु पर हमारी तेजस्वी शून्य प्राकक्तप्पना स्पष्टकृत हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि आधुनिकता को लैगिक न्यायप्रियता के रूप में
समझे जाने के विन्दु पर ग्रामीण परिषेद के (66%) एवं नगरीय परिषेद के (73.33%) छात्र/छात्राओं की साकारतम सोच में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। छात्र/छात्राओं द्वारा छात्र-संघ की राजनीति में भाग लेना उनकी आधुनिक प्रवृत्ति का परिचयक है के प्रश्न पर निदर्श का 63.33 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया।

प्रजातात्मिक प्रणाली को आधुनिक विचारधारा की देश माने जाने के प्रश्न पर हमारी चौदहवीं शून्य प्राकृतिक्या निरस्त हो गयी है और हम इस निषेध पर पहुंचे हैं कि कृषि (43.52%) एवं व्यापार (78.84%) की अपेक्षा नौकरी (84.61%) पेशा के संस्करों से समबन्धित छात्र/छात्राओं की सोच में इस विन्दु पर सार्थक अन्तर पाया गया अर्थात् नौकरी पेशा से समबन्धित संस्करों के पुत्र/पुत्रियों एवं पाल्य छात्र/छात्रा प्रजातात्मिक प्रणाली को आधुनिक विचारधारा की देश मानते हैं जो उनकी आधुनिकतावशेष का परिचयक है। समाजवाद का आधुनिकता की श्रेणी में रखने के विन्दु पर निदर्श का सार्थिक भाग (56.67%) सकारात्मक पाया गया। राज्य के धर्म से पृथक रखने को आधुनिक विचारधारा, समझने के प्रश्न पर निदर्श के 61.66 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। शैक्षिक दूर पर विद्याधिकारियों को ले जाना शिक्षा के श्रेणी में एक नई प्रवृत्ति है के प्रश्न पर निदर्श के 57.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये जो उनकी आधुनिकतावशेष का ध्यान है। किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान के लिए पुलिस और न्यायालय का दर्शाए खटखटाने को आधुनिकतावशेष का परिचयक मानने के विन्दु पर निदर्श का 51.33 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। परिवार के सभी सदस्यों का आरंभिक रूप से निर्माण होना आधुनिक विचारधारा है के प्रश्न पर हमारी पद्धतियों शून्य प्राकृतिक्या निरस्त हो गयी है और हम इस निषेध पर पहुंचे हैं कि संयुक्त परिवार (66.66%)
की अपेक्षा एकाकी परिवार (76.08%) के छात्र/छात्राओं में इस विन्दु पर सार्थक अन्तर पाया गया जो संयुक्त परिवार के छात्र/छात्राओं की अपेक्षा एकाकी परिवार के छात्र/छात्राओं की अपेक्षाकृत अधिक आधुनिकताबोध से गुप्त होने का दृष्टकोण है।

एकाकी परिवार आधुनिक संस्कृति के केन्द्र होते हैं के प्रश्न पर 79 प्रतिशत उल्लरदाता सकारात्मक पाये गये। वैश्वीकरण की अवधारणा को आधुनिक सोच के रूप में, देखे जाने के विन्दु पर हमारी सोलहवीं शूरुआ क्राक्कल्पना निर्भर हो गयी है और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि ग्रामीण परिवेश (48%) के छात्र/छात्राओं की अपेक्षा नगरीय परिवेश (63.33%) के छात्र/छात्राओं की इस विन्दु पर आधुनिक सोच अधिक सकारात्मक पायी गयी। विश्व के सभी देशों के मध्य सांस्कृतिक तत्त्वों का आदान-प्रदान करना आधुनिक विचारधारा का प्रतीक है के प्रश्न पर 64.67 प्रतिशत उल्लरदाता सकारात्मक पाये गये। वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आधुनिकता की दृष्टि से देखे जाने के प्रश्न पर 76.67 प्रतिशत छात्र/छात्र सकारात्मक पाये गये।

बाल विवाह/प्रेम विवाह/सुनियोजित विवाह के विकल्प के विन्दु पर निदर्श के 84.67 प्रतिशत छात्र/छात्रा सुनियोजित विवाह के पक्षधर पाये गये। निदर्श के 88.33 प्रतिशत छात्र/छात्रा अपनी जाति में विवाह करना पसंद करते पाये गये। अन्तरराष्ट्रीय विवाह से सभी जातियों के मध्य एकता एवं समरसता की स्थापना होगी के विन्दु पर निदर्श का 54 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। निदर्श के सर्वशक्त संयुक्त परिवार (57.33%) संयुक्त परिवार में रहने के पक्षधर पाये गये। आप किस प्रकार की प्रस्थाति (पद) को श्रेष्ठ समझते हैं के प्रश्न पर निदर्श
के सर्वाधिक उत्तरदाता (85.67%) परिश्रम एवं गुणों के आधार पर प्राप्त पद को श्रेष्ठ माना। पुरुषों को भी गृहकार्य में महिलाओं का हाथ बैठाना चाहिये के प्रश्न पर 83 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। वर्तमान समय में पद्म प्रश्न उचित है के प्रश्न पर ग्रामीण परिवेश (72.68%) की अपेक्षा नगरीय परिवेश के छात्र/छात्रा (84.66%) अधिक सकारात्मक पाये गये। जाति व्यवस्था का पक्ष लेने के प्रश्न पर निदर्श के सर्वाधिक छात्र/छात्रा (54.34%) नकारात्मक पाये गये। शिक्षा के विभिन्न स्तरों के प्रश्न पर निदर्श के सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने कलात्मक, प्राचीनविधिक एवं वैज्ञानिक दीनो स्तरों को श्रेष्ठ माना। सभी धार्मिक समाजों में भाग लेने के प्रश्न पर निदर्श के सर्वाधिक छात्र/छात्रा (50.67%) सकारात्मक पाये गये।

राजतंत्रात्मक/प्रजातंत्रात्मक या समाजवादी शासन व्यवस्था के प्रश्न पर निदर्श के 91 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने प्रजातंत्रात्मक एवं समाजवादी शासन व्यवस्था को श्रेष्ठ माना। अपने अवकाश के क्षणों का किस प्रकार व्यतीत करते हैं, पर निदर्श के 61.67 प्रतिशत उत्तरदाता धार्मिक समाजों में जाकर, धार्मिक पुस्तकों को पढ़कर एवं सत्संग करके विलाये जाने पर अपना मत व्यक्त किया। निदर्श के सर्वाधिक उत्तरदाताओं (55%) ने नगरीय जीवन शैली को ग्रामीण जीवन शैली की अपेक्षा अधिक पसंद किया। निदर्श के 88.33 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने घर में पकाये गये भोजन को, होटलों एवं रेस्तरांओं के भोजन की अपेक्षा, अधिक श्रेष्ठ समझा जो उनके परम्परागत शैली का द्रोह तक है। शुभ व अशुभ फल देने वाले संकुचन में विश्वास के प्रश्न पर निदर्श के सर्वाधिक छात्र/छात्रा (52.34%) नकारात्मक पाये गये। बिल्ली द्वारा रस्ता काटने पर अपने महत्वपूर्ण यात्रा या कार्य को स्थगित कर देने के प्रश्न पर निदर्श का 66.33 प्रतिशत भाग नकारात्मक पाया गया। पुरानी या
नई पीढ़ी के विचारों को मानने के प्रश्न पर निदर्श के 55.67 प्रतिशत छात्र/छात्राओं ने नई पीढ़ी के विचारों को श्रेष्ठ माना।

छात्रों के मौलिक सुख सुविधाओं के उपयोग के प्रश्न बिन्दु पर निदर्श के 63.33 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। वे छात्र परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते हैं जो आधुनिक उपकरणों का प्रयोग करते हैं के प्रश्न पर निदर्श का 62 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में होने वाले आविष्कारों के यथार्थता क्रम और उपयोग के प्रश्न पर निदर्श का 77 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। कम्प्यूटर और जनसांचार माध्यमों ने समाज में अपनी उपस्थिति और महत्त्व को दर्शाया है के प्रश्न बिन्दु पर 94 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिये बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना किये जाने के प्रश्न पर निदर्श के 92 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। किसी पद पर नियुक्ति के लिए अभ्यर्थियों की योग्यता और प्रतिभा को विशेष महत्त्व प्रदान किये जाने के प्रश्न पर 95.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये। विद्यार्थियों के लिए तकनीकी शिक्षा अनिवार्य किये जाने के प्रश्न पर 76.67 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। आवागमन के साधनों में वृद्धि किये जाने के प्रश्न पर निदर्श का 83.67 प्रतिशत भाग सकारात्मक पाया गया। जीवन के हर क्षेत्र में समतामूलक सिद्धांतों की स्थापना किये जाने के प्रश्न पर निदर्श का सर्वाधिक भाग (75%) सकारात्मक पाया गया। व्यक्ति को वहीं कार्य करना चाहिये जिससे अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें के प्रश्न निदर्श के 93.67 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये।
य्विका के मानवतावादी होने और सभी मनुष्यों, धर्मों और संस्कृतियों के प्रति समान भाव रखने के प्रश्न पर निदर्श के 97.33 प्रतिशत छात्र/छात्रा सकारात्मक पाये गये। य्विका का लीक से हटकर सोचना चाहिए और उन सभी नये विचारों का स्वागत करना चाहिए जिससे य्विका और समाज दोनों को लाभ पहुँचता हो के विन्दु पर निदर्श के 89.67 प्रतिशत उत्तरदाता सकारात्मक पाये गये।

विलम्ब विवाह को आधुनिकताधारिक (सूचक) मानने के प्रश्न पर प्रामाण्य छात्र/छात्राओं (76.66%) की अपेक्षा नगरीय छात्र/छात्राओं (96.66%) अधिक आधुनिक पायी गयी।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोकन के आलोक में हम यह कह सकते की स्थिति में है कि हमारा समूचा निदर्श एक ओर परम्परागत से घिरा हुआ है और दूसरी तरफ वह आधुनिकताभाषा के अवस्था में भी पहुँचकर परम्परा और आधुनिकता जैसे सामाजिक धरों के मध्य जीवन के विविध पक्षों पर आधारित विविध क्रियाओं का सम्पादन कर रहा है। जब हम उच्च शिक्षा छात्र/छात्राओं के परम्परागती स्वरूप पर विचार करते हैं तो यह पाते हैं कि धार्मिक सहभागिता, ईश्वरवादिता जैसे विन्दुओं पर वे आज भी सुदृढ़ हैं। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की धार्मिक सहभागिता अधिक है और उच्च तथा पिछड़े वर्गीय छात्र/छात्राओं की अपेक्षा निम्न आय वर्गीय छात्र/छात्राओं अधिक ईश्वरवादी हैं। प्रति रखने, संस्कारों के आयोजन, कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ, पुनर्जन्म और स्वर्ग-नरक में विश्वास, भार्य में विश्वास, धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में रुचि, तीर्थयात्रा, नारी समान, गुरुजनों का सम्मान, व्योमों के प्रति समान नजर व्यवहार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोणों के प्रति उच्च शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के प्रति ऊच शिक्षा छात्र/छात्राओं आज भी परम्परागत दृष्टिकोणों के
है कि ये जिस आधुनिकताबोध के धरातल पर खड़े हैं उस पर आधुनिकता के नाम पर नवीन कल्पनकारी विचारधारा, इंटरनेट, डिश टीवी, भौतिक साज-सज्जा, अभिनव परिधान, निष्पक्ष निर्णय प्रवृत्ति, कार्य कुशलता, शैक्षिक विशेषीकरण, साहित्य, वैश्वानिक शिक्षा, वर्तमान उच्च शिक्षा, जाति और धर्म से मुक्त, क्रियात्मक तार्किकता, आक्षेप और सुक्षम, विधवा पुनर्विवाह की स्वीकृति, वैज्ञानिक व्यापारिता, छात्रों में संगठनात्मकता, प्रजातात्त्विकता, समाजवादिता, राज्य की धर्म से पृथकता, संवैधानिक अभिकार की प्रयुक्तता, शैक्षिक भ्रमण (एजुकेशनल टूर), आत्मनिर्भरता, एकाकी परिवार में विवाह, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक तत्त्वों का विनिमय और विश्व परिवारवादिता आदि विन्दुओं पर अपने आधुनिकता समबन्धी संज्ञान और आधुनिक समझ का परिचय देते हैं जिसके आधार पर उनकी आधुनिकताबोध को जाना जा सकता है।

जब हम निदर्श को परम्परा और आधुनिकता के सह-अस्तित्व के चरमों से देखते हैं तो यह पाते हैं कि ये परम्परावादी और आधुनिक दोनों हैं। इनकी दृष्टि में सुनियोजित विवाह, अपनी जाति में विवाह, संयुक्त परिवार में विवाह, धार्मिक समाजों में सहभागिता, घर में पके हुए भोजन आदि जीवन की संस्कृति के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे। भोजन आदि जीवन की सरस्ता के लिए अपने ही संस्कृति के समाधान में पके हुए थे।
उच्च शिक्षारत छात्र/छात्राओं की आधुनिक प्रवृत्ति के जिन कारकों
को इस अनुसंधान के दौरान चिन्हित किया गया है वे निम्नलिखित हैं :-

1. भौतिक सुख–सुविधाओं के प्रति ललक।
2. आधुनिक उपकरणों की शैक्षिक उपयोगिता।
3. विज्ञान और प्रौद्योगिकीय पर्यावरण।
4. जीवन की सुगमता के लिए आवश्यक उपकरण।
5. आधुनिक आदर्श जिससे हमारे छात्र/छात्र आत्मा और समाज के विकास की
   आशा करते हैं।
6. वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
7. तकनीकी शिक्षा का बड़ता महत्व।
8. संचार के बढ़ते समय और यातायात के साधनों में वृद्धि।
9. समतामूलक सिद्धांत के प्रति बढ़ता सकारात्मक दृष्टिकोण।
10. विवेकीकरण।
11. कल्याणकारी दृष्टिकोण।
12. बढ़ता मानववादी दृष्टिकोण।
13. भौतिक वस्तुओं की बढ़ती उत्पादकता।
14. दिल्ली बिवाह के प्रति बढ़ती सकारात्मक प्रवृत्ति।
15. सामाजिक कुशलतियाँ एवं रुढ़ियाँ के प्रति नकारात्मक रुढ़ि।

**